धरती

त्रिलोचन शास्त्री

◆

माँ के चरणों में

क्रम

धरती

मुझे जगत जीवन का प्रेमी
बना रहा है प्यार तुम्हारा

(१)

मेरी दुर्बलता को हरकर
नयी शक्ति नव साहस भरकर
तुमने फिर उत्साह दिलाया
कर्म - क्षेत्र मे बढ़ूँ सँभल कर

तब से मैं अविरत बढता हूँ
बल देता है प्यार तुम्हारा

(२)

मुझमे जीवन की लय जागी
मैं धरती का हूँ अनुरागी
जडीभूत करती थी मुझको
वह सम्पूर्ण निराशा त्यागी

मैं निर्भय संघर्ष - निरत हो
बदल रहा संसार तुम्हारा

(३)

सुनता हूँ मैं जीवन का स्वर
गाता हूँ मैं जीवन का स्वर
विपुल कण्ठ हर्षाकुल गाते
अमर रहेगा जीवन का स्वर

मैं युग जीवन का अनुयायी
मुझको प्रेरक प्यार तुम्हारा

(४)

हैं असख्य कर, पद सहकारी
अतुलनीय है यह तैयारी
सभी कार्य पलभर मे होते
यह सामाजिक विजय हमारी

आज हमारी इच्छाओं से
रचा गया संसार तुम्हारा

(५)

शेष नही है तम दुखदायी
ज्ञान ज्योति नव भू पर छायी
आज सङ्गठित बल ने मिलकर
सुन्दर नयी सृष्टि उपजायी

सोच रहा हूँ बल देता है
कितना कितना प्यार तुम्हारा

(६)

नहीं विश्व से हैं हम बाहर
विश्व हमारे भीतर - बाहर
जग की भावी रूप - योजना
हम पर तुम पर सब पर निर्भर

विश्व बदलने का नूतन क्रम
कार्य, लगन, सस्कार हमारा

(७)

हम तुम इसी जगत् के प्राणी
इसी जगत् ने दी है वाणी
इसको नव - निर्मित करने मे
हों हम - तुम सक्रिय कल्याणी

तन - मन में बँधकर रहने मे
अब न रहा उपकार हमारा

(८)

सूर्य, चन्द्र, घन, पवन, गगन मे
रहते हैं तल्लीन लगन में
इनसे शोभा, श्री, नव जीवन
विकसित भूतल पर क्षण क्षण में

कितने अर्थहीन हम होंगे
यदि न सजग सस्कार हमारा

(९)

वन, पर्वत पर, सागरतल पर
व्योम विजन मे महिमा - निर्भर
अपना चरण - चिह्न हम छोड़े
अजर अमर गति - प्रेरक द्युतिधर

भावी मानव जिससे माने
हो सशक्त आभार हमारा

(१०)

लहरों का क्षण - कालिक जीवन
किन्तु अमिट है उनकी कम्पन
हम भी अपने क्रिया - कम्प से
दे प्रोत्साहन दे नव जीवन

जिससे आगामी जन सोचे
यों विकास - इतिहास हमारा

(११)

शक्ति प्रकृति की अति विस्तृत है
और अभी तक वह अविजित है
अधिकृत कर के सेवा लेना
सामाजिक उससे समुचित है

यही हमारी मानवता की
उन्नति - क्रम का एक सहारा

◆

सोच-समझ कर चलना होगा
अगति नहीं लक्षण जीवन का

(१)

परिवर्तन होते रहते हैं
उन्हे न रोक सका है कोई
परिवर्तन की शक्ति अतुल है
उसे न बाँध सका है कोई
तुम परिवर्तन की गति समझो
तुम परिवर्तन को पहचानो
तुम परिवर्तन को अपनाकर
विश्व बना लो अपने मन का

(२)

अब तक जो होता आया है
उसमे जन - सम्मान नहीं है
उसमे मानव को मानव के
सुख - दुख का कुछ ध्यान नही है
उससे व्यक्तिवाद पनपा है
उससे पूँजीवाद हुआ है
इन्हे नष्ट कर शोषित मानव,
शाप काट दो जग - जीवन का

(३)

अब कुछ ऐसी हवा चली है
जिससे सुप्त जगत् जागा है
जिससे कम्पित जीर्ण जगत् ने
आज मरण का वर माँगा है
उनको बहुत जल्द दफनाओ
नवयुग के जन आगे आओ
नव निर्माण करो तुम जग का,
जीवन का, समाज का, मन का

(४)

यह सक्रान्ति काल आया है
हम इसका कुछ लाभ उठाएँ
आज पुरानी निर्बलता की
जगह शक्ति नूतन बैठाएँ

आँख खोल, बनकर तटस्थ,
निष्क्रिय दर्शन का समय नहीं है
आज हमारी एक एक गति पर
निर्भर भविष्य जीवन का

(५)

बिगुल बजाओ और बढ चलो
यह सम्मुख मैदान पडा है
मानवता के मुक्ति - दूत तुम
कौन तुम्हारे साथ अडा है

यह सघर्ष - काल आया है
आयी जय - यात्रा की बेला
तुम नूतन समाज के स्रष्टा
पगध्वनि में गर्जन जीवन का

(६)

जीवित मानव - महिमा तुम से
तुम मानव - जीवन के धर्त्ता
तुम मानव - जीवन के कर्त्ता
तुम मानव - जीवन के हर्त्ता

विपुल शक्तियों के निधान तुम
अपमानित जीते धरती पर
अपना शक्ति - प्रकाश दिखा दो
क्षय कर अत्याचार अनय का

श्रमिक, कृषक भोगो वह अमृत
जो फल है जीवन-मन्थन का

◆

तुम बढ़ो विजय के पथ पर
नव तेज ओज धृति गति धर

(१)

मैं गान विजय के गाऊँ
जन जन की शक्ति जगाऊँ

तुम महाप्राण सङ्गठित शक्ति
तुम जग-जीवन की अभिव्यक्ति

तुम कर्म-निष्ठ
तुम ध्येय-निष्ठ
तुम धैर्य-निष्ठ

प्रति प्रति पग-ध्वनि पर नव जीवन का गर्जन
प्रति प्रति ललकारों मे अभिनव भव-सर्जन

तुम बढो बढ़ो धुन-तत्पर
फहरा रक्त-ध्वज अम्बर
मैं गान विजय के गाऊँ
जन-जन की शक्ति जगाऊँ

(२)

तुम बढो जिस तरह दीप्त ज्वाल
कर दग्ध रूढि का अन्तराल

साम्राज्यवाद

सामन्तवाद

औ' व्यक्तिवाद

जो बाँध रहे गति जीवन की कर उन्हे नष्ट

तुम सामाजिक स्वातंत्र्य-साम्य को करो स्पष्ट

होवे स्वतंत्र नारी-नर

हो सामञ्जस्य अमलतर

मैं गान विजय के गाऊँ

जन-जन की शक्ति जगाऊँ

(३)

तुम करो नष्ट सब भेद-भाव

तुम हरो निखिल जग के अभाव

सब बाधा हर

होकर तत्पर

नव साहस भर

तुम विजयी बनकर अपना नियमन आप करो

जीवन की सञ्चित व्याकुलता सब ताप हरो

जग-जीवन तुम पर निर्भर

तुम अपने बल पर निर्भर

मैं गान विजय के गाऊँ

जन-जन की शक्ति जगाऊँ

◆

मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत मे पानी

(१)

आये न बहुत दिन बादल
होता नित घाम भयङ्कर
हरियाली रही न निर्मल
औ' लगी फसल मुरझाने

आखिर अपने बल लेकर
मिलकर वे दोनो प्रानी
दे रहे खेत मे पानी

(२)

है धूप कठिन सिर - ऊपर
थम गयी हवा है जैसे
दोनो दूबो के ऊपर
रख पैर खीचते पानी

उस मलिन हरी धरती पर
मिलकर वे दोनो प्रानी
दे रहे खेत मे पानी

(३)

है अचल पवन, साँसे चल
चल रहा पसीना अविरल
चलती है बेड़ी प्रतिपल
विश्राम नही है उनको

है आज नही उनको कल
मिलकर वे दोनो प्रानी
दे रहे खेत मे पानी

(४)

बहती छोटी सी नाली
तेजी से, लहरोंवाली
है उसकी चाल निराली
देती बढती, नव जीवन
भरती नूतन हरियाली
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत मे पानी

(५)

उजले कपसीले बादल
फिरते नभ मे दल के दल
बढ रही तपन है पल पल
वे जब - तब करते छाया
देते श्रम को नूतन बल
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(६)

हल्की पुरवैया आती
श्रम - जल उनका हर जाती
विकसित कर उनकी छाती
वे और अधिक श्रम करते
उनकी उमङ्ग बढ जाती
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(७)

कुछ पछी उड़कर आते
उडते - उड़ते बढ जाते
उन कानों में भर जाते
सर्राटा या स्वर अपना
वे अथक सींचते जाते
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

(८)

जब तब वे बाते करते
साँसो को सयत रखते
अविराम काम ही करते
पल दो पल नयन मिलाते
बल की परिभाषा करते
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत मे पानी

(९)

वे सीच रहे जग - जीवन
जग - हित मे उनका तन - मन
वे फिर भी निर्बल निर्धन
विश्वास न उनको अपना
वे अपने - पन से उन्मन
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत मे पानी

(१०)

बीता है एक पहर भर
श्रम करते रहे बराबर
वे श्रम - जीवन पर निर्भर
यह उनका प्यार अनोखा
है उत्पादक है दृढ - तर
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत मे पानी

(११)

विश्राम जरा करने को
आराम जरा करने को
नव कर्म - शक्ति भरने को
आये हैं तरु छाया मे
अपनी थकान हरने को
मिलकर वे दोनों प्रानी
दे रहे खेत में पानी

◆

बह रही वायु सर्-सर् सर्-सर्
बरसते मेघ झर्-झर् झर्-झर्
काँपते पत्र थर्-थर् थर्-थर्

(१)

लो, आज सजा है आसमान
धरती पर जीवन भासमान
लघु-लघु धाराएँ धावमान
ऊर्मिल, द्रुततर, मनहर, सुन्दर

(२)

बहु वर्णधरा बहु रूपधरा
हो गई नवल जन-मनोहरा
यह परम पुरातन वसुन्धरा
गतिशील पवन ज्यो जीवन-स्वर

(३)

हो गया चित्र-पट पूर्ण गगन
छवि-रूप-वर्ण-मय चचल घन
पल मे कुछ पल मे कुछ बन-बन
क्षण-क्षण मे प्रियतर, सुन्दरतर

(४)

लो, उठे भूमि से हरिताकुर
शोभित है ग्राम-ग्राम पुर पुर
हो आया शीतल मानव-उर
नव सृष्टि करेगा हो तत्पर

(५)

पाकर पावस का पावन क्षन
करती स्वरूप का परिवर्तन
तन से मन से बनती नूतन
यह प्रकृति सदा नव-जीवनधर

◆

अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

(१)

अपने बल का बोध हुआ है
तोड़ रहे सारे बन्धन
करते हैं स्वतन्त्र तन मन
उर मे भरे सतेज लगन
करते नव जीवन-अङ्कन
आज बढ़ा है उनका मन
समझ गये वे अपनापन
समझ गये जग का जीवन
आज शक्ति सबकी जागी है
नया पथ जो पाया है
अब तो जन-जन के मन-मन मे
अपना गौरव छाया है

(२)

जन-समाज आगे बढता है
नयी सृष्टि की धुन लेकर
बढ़ने का साहस लेकर
और विजयकी धृति लेकर
अकुतोभय बाधा-निधितर
जग-जीवन-नौका खेकर
जन-जन को ममता देकर
जन-जनको नवबल देकर
सबने आज मिला स्वर अपना
गीत साम्य का गाया है
अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

(३)

आज नहीं अपमानित जीवन
आज सुखी सब नर-नारी
शेष नही वह लाचारी
मनुज-शक्ति की तैयारी
नही मनुज को भयकारी
प्रकृति विजय की तैयारी
अखिल अजेय शक्ति—सारी
आज मनुज को हितकारी

एक दूसरे को बल देकर
जन-समूह बढ़ आया है
अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

(४)

जब मानव-हित का आपस में
शेष विरोध नहीं तिलभर
तर कर विपद-सिन्धु दुस्तर
खोज सत्य जीवन का दर
हुआ मनुष्य आत्म-निर्भर
गा जीवन के गीत अमर
बढता चलता है पथ पर
समझ गया है सत्य प्रखर

सत्य, आज मानव-महिमा को
दुनिया ने अपनाया है
अब तो जन-जन के मन-मन में
अपना गौरव छाया है

◆

तारकों से ज्योति चलकर भूमि तल पर
आ रही है आ रही है आ रही है

(१)

है अँधेरी रात
कल है
ब्याह का दिन
दीपकों से गाँव का एकान्त अमलिन
जागती हैं नारियाँ

आज अपने गीत से वे तारकों को हैं जगाती
साज शादी के सजाती

आज सारा गाँव एक - प्राण मिलकर
आज सबका हर्ष जागा है विमल तर
आज जीवन-रागिनी अविराम उठकर और उठकर
छा रही है छा रही है छा रही है

(२)

घर बसेगा
बहू
आयेगी सुघर - तर
घर बना देगी उतरकर देव - मन्दिर
सास मन में सोचती है

वह हमें सुख और सबको शान्ति देगी
वर हृदय मे सोचता है

काँपती सुख से कहीं बैठी अकेली
साधती होगी बहू कुछ भाव के स्वर
आज मनसा इन सबों की गीत की पहली कड़ी ही
गा रही है गा रही है गा रही है

(३)

भोर होने मे
पहर भर
की कसर है
जायगी बारात अब—यह सुअवसर है
बज रहे बाजे निरन्तर

राह - भर ये जायँगे अविराम बजते
औ' सभी का मन जगाते

जा रही मा पुत्र को देने बिदाई
आज उसकी देह भर मे स्फूर्ति छाई
लोग पैदल, पालकी में चल रहे बारात देखो
जा रही है जा रही है जा रही है

(४)

मध्य - युग का
साज
औ' सामान सारा
चाल - ढाल सभी पुरानी वही धारा
मध्य - युग के भाववाही

ये नये युग से अपरिचित औ' सशकित
ये गये सब दिन सताये

चल रहे प्राचीनता से लौ लगाये
एक अपनी नई ही दुनिया बसाये
आज भी इनको पुरानी बात पहले रूप मे ही
भा रही है भा रही है भा रही है

◆

बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ़ पाया है

(१)

ताप, प्रहार सभी कुछ सहते
बढ़ते हैं जो बढ़नेवाले
अपने क्षेत्र बनाते चलते
हैं अपनी धुन के मतवाले

कौन दूसरे का बल लेकर
खड़ा भूमि पर रह पाया है
बरगद की छाया के भीतर
नही अन्य तरु बढ पाया है

(२)

सुख होता है श्रम बचता है
शेष नहीं चिन्ता रह जाती
बहुत, पुरातन क्रिया - शक्ति है
अब भी मन को सुखी बनाती

किन्तु पूर्वजों पर ही आश्रित
मानव निर्बल हो आया है
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ पाया है

(३)

जिसने जीवन को अपनाकर
अखिल सङ्कटों को ललकारा

जिसने जीवन के पल-पल को
किया जागरित और सँवारा

वही समूह बना पुरुषार्थी
जीवन-शक्ति समझ पाया है
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ पाया है

(४)

बदल गया है काल-कलेवर
बदल गयी जीवन की धारा
आज पुरानी रीति-नीतियाँ
दें न सकेंगी रञ्च सहारा

आँख खोल मानव, दृग मीचे,
देख, कहाँ तक तू आया है!
बरगद की छाया के भीतर
नहीं अन्य तरु बढ पाया है

(५)

कर नूतन निर्माण, दिखा कुछ
तू अपने पौरुष का करतब
पराधीनता विविध तोड़ कर दिखा
नयी गति का उपक्रम अब

बहुत पुरातन की छाया मे
मानवता ने दुख पाया है
बरगद की छाया के भीतर
नही अन्य तरु बढ पाया है

◆

छा गये बादल, छिपे तारे, ढका आकाश
कहाँ शेष प्रकाश ?

(१)

अन्धकार अपार भूपर व्यापमान
अन्धकार अपार छाया आसमान
अन्धकार सशक्त केवल अन्धकार
कहाँ जीवन का विपुल विस्तार—
हास — विलास !
छा गये बादल, छिपे तारे, ढका आकाश
कहाँ शेष प्रकाश ?

(२)

व्यर्थ-दृष्टि अदृष्ट जिससे सृष्टि-साज
हो रही है घन-तिमिर मे वृष्टि आज
नवल अकुर नवल जीवन नव समाज
हो रहा निर्माण, नाश, विकास, ह्रास—
स———हास !
छा गये बादल, छिपे तारे, ढका आकाश
कहाँ शेष प्रकाश ?

(३)

आजका यह तिमिर करता शक्ति-दान
समझने मानव लगा है शक्ति - ज्ञान
स्वत्त्व, जीवन, प्रगति, सामञ्जस्य, मान
हो चला सङ्घर्ष इससे जगत —
का अधिवास !
छा गये बादल, छिपे तारे, ढका आकाश
कहाँ शेष प्रकाश ?

◆

पथ है, तू है, मेरे राही; तेरा चलना बड़ा भला है
अविरल चलना बड़ा भला है

(१)

जिस समाज का तू सपना है
जिस समाज का तू अपना है
मैं भी उस समाज का जन हूँ
उस समाज के साथ-साथ ही—
मुझको भी उत्साह मिला है

(२)

ओ तू नियति बदलने वाला
तू स्वभाव का गढने वाला
तूने जिन नयनो से देखा
उन मजदूर - किसानों का दल—
शक्ति दिखाने आज चला है

(३)

साम्राज्य - औ' - पूँजीवादी
लिये हुए अपनी बरबादी
जोर - आजमाई करते हैं
आज तोड़ने को उनका मन
उठकर दलित समाज चला है

(४)

तेरी गति में जीवन गतिमय
तेरी मति में मन सङ्गतिमय
तेरी जागरूकता द्युतिमय
तेरी रक्षा की चिन्ता में
जन - जीवन का सुफल फला है

◆

चाँदनी चमकती है गंगा बहती जाती है

(१)

चल रही हवा
धीरे-धीरे
सीरी-सीरी,
उड़ रहे गगन में
झीने - झीने
कजरारे
चञ्चल
बादल !
छिपते - दिपते
जब - तब
तारे
उज्वल, झलमल ।
चाँदनी चमकती है गङ्गा बहती जाती है

(२)

ऋतु शरद और—
नवमी तिथि है
है कितनी-कितनी मधुर रात
मन में बस जाती शीतलता
है अभी नहीं जाडा कोई
बस जरा-जरा रोएँ काँपे
तन-मन में भर आया उछाह
हाँ, दिन भी आज अजीब रहा—
रिमझिम-रिमझिम पानी बरसा
फिर खुला गगन

हो गईं धूप
दिन भर ऐसा ही रहा तार
कपसीले, ऊदे, लाल और
पीले, मटमैले— दल के दल
आये बादल !
अब रात—
न उतना रङ्ग रहा
काला—हलका या गहरा
या धूँएँ - सा
कुछ उजला - उजला
किसके अतृप्त दृग देखेंगे
चाँदनी चमकती है गङ्गा बहती जाती है

(३)

कुछ सुनती हो,
कुछ गुनती हो—
यह पवन, आज यों बार - बार
खींचता तुम्हारा आँचल है
जैसे जब-तब छोटा देवर।
तुम से हठ करता है जैसे—
तुम चलो जिधर वे हरे खेत।
वे हरे खेत—
है याद तुम्हें ?—
मैंने जोता तुमने बोया
धीरे-धीरे अंकुर आये
फिर और बढ़े
हमने तुमने मिलकर सीचा
फैली मनमोहन हरियाली
धरती माता का रूप सजा
उन परम सलोने पौदों को
हम दोनो ने मिल बड़ा किया
जिनको नहलाते हैं बादल

जिनको बहलाती है बयार
वे हरे खेत कैसे होगे
कैसा होगा इस समय ढङ्ग
होंगे सचेत या सोये - से
वे हरे खेत
चाँदनी चमकती है गङ्गा बहती जाती है

(४)

है सन्नाटा बढ रहा
रात भी बीत रही है
सारा आलम सोया है
पशु-पंछी सोये हैं
तो अर्थ-हीन
कुछ अर्थ-पूर्ण
स्वर जग मे व्यापे
फिर कौन कहे
दुनिया कब,
क्या-क्या, जीत रही है
तब कौन किसे समझाये
सब खोये-खोये हैं
फिर कौन कहाँ तक जन-जन की
करुणा को नापे
चाँदनी चमकती है गङ्गा बहती जाती है

◆

बरस रहे रस बरस रहे रस
गरज-गरज घन ये

(१)

धारामयी धारा हो आयी
रङ्ग - रङ्ग की ले सुघराई
आयी, सुन्दरता अब आयी
नवल बने सब
नवल बने सब
वन - उपवन
जन
ये

(२)

चमक रही बिजली पल - पल पर
नव जीवन विकसित जल - थल पर
देख रहे बादल पल - पल पर
हरित - भरित जग
हरित भरित जग
विहसित कन—
कन
ये

(३)

गतिमय जग, गतिमय जग - जीवन
गतिमय जीवन का प्रति छन - छन
गतिमय बादल, बिजली गर्जन
अविरल धारा
अविरल धारा
धरती के
धन
ये

दुनिया स्थिर नहीं बदलती है
वह बदल रही है क्षण प्रति-क्षण

(१)

आकाश और यह भूमि और
होता है कण-कण और-और
तन और-और मन और-और
यह परिवर्तन अविराम नवल
होता रहता है क्षण प्रति-क्षण

(२)

रंगीन मनोहर भूतकाल
उस पर अपना मन डाल-डाल
विह्वल होना तज देश-काल
जीवन-विरोध गति का विरोध
कहता प्रवाह है क्षण प्रति-क्षण

(३)

जीवन के वे सुखमय विराम
जिनमे उलझा मन याम-याम
भूला जिसमे तन धरा धाम
वे गये-गये, वे गये-गये
अन्तर बढता है क्षण प्रति-क्षण

(४)

जीवन का है अविरल प्रवाह
बहु भाव-पूर्ण, अद्भुत, अथाह
बहु रंग, रूप, गति : नई राह
रह संग-संग ले नवल रंग
बढ़ना सुन्दर है क्षण प्रतिक्षण

◆

गगा बहती है लहराती
लहरोंवाली

◆

(१)

उठती तरंग पर नव तरंग
जैसे उमग पर नव उमंग
मन बह चलता है सग-सग

दृग में छा जाती है नूतन
तट-हरियाली
गङ्गा बहती है लहराती
लहरोंवाली

(२)

उडते हैं नभ मे खग, बादल
गतिशील पवन शीतल अविरल
सन्ध्या-वेला कचन के पल

भूतल-नभतल सब स्वर्ण-प्राय
शोभाशाली
गङ्गा बहती है लहराती
लहरोंवाली

(३)

नावे चलती हैं तने पाल
तट-भूमि हरित, निर्मल, विशाल
कुछ जुते खेत कृषि-अक-माल

श्रमलीन विपुल मानव समूह
कर-बलशाली
गङ्गा बहती है लहराती
लहरोंवाली

(४)

सुन्दर गङ्गा की धार-धवल
है युग युग से बह रही नवल
मानव है नत सश्रद्ध अचल

इसके प्रवाह की अविरलता
गौरवशाली
गङ्गा बहती है लहराती
लहरोंवाली

◆

पथ पर चलते रहो निरन्तर

◆

पथ पर
चलते रहो निरन्तर

सूनापन हो
या निर्जन हो

पथ पुकारता है
गत - स्वन हो

पथिक,
चरण - ध्वनि से
दो उत्तर

पथ पर
चलते रहो निरन्तर

◆

बस चलता नहीं, तुम्हारी सुधि
आया करती है
बार-बार

◆

नभ मे तारे धरती पर तम
तम मे दीपोंकी ज्योति विषम
उसकी सीमा, गतिका संयम
देखा करता हूँ
हार हार

देखा करता हूँ जग-जीवन
जग-जीवन का सयत नर्तन
नर्तनका लहर-भरा क्षण-क्षण
लहरों से निर्मित
सबल धार

जग के जीवन का हर्ष शोक
मेरा चचल मन रोक-रोक
रचता अनेक कल्पना लोक
देखा करता हूँ
बार - बार

तुमसे जो दुर्लभ मिला अमृत
उससे अबतक सक्रिय जीवित
हो गई शक्ति इतनी सञ्चित
जय - पथ पर हूँ मैं
हार - हार

◆

आज सुन स्वर मे तुम्हारे

◆

आज सुन स्वर मे तुम्हारे
गीत अपने
याद आये याद आये
भूल मैं जिनको चुका था
वे मधुर सपने

देख-देख भरे नयन मे भाव
भाव वे जिनमे न रंच दुराव
या बिलगाव
समझ पाया मधुर-मधुर स्वभाव
खिल रही हो तुम कली-सी
वृन्त पर अपने

देखती हो तुम नया ससार
औ नये ससार का व्यवहार
शि ष्टा चा र
हो लुटाती और अपना प्यार
रग मे रगकर जगत फिर
देखता सपने

तुम नदी-सी बहु नगर के पास
नगर-नगर भरा तुम्हारा हास
और विलास
तरुण-युग अनुचर तुम्हारा पास
तुम चपल मैं अचल
सुनता गीत अपने
आज मीठे लग रहे हैं
गीत अपने

◆

संगी रहे आज तारे सारी रात

◆

(१)

उड़ - उड़ आये बादल
औ चले गये
सब चले गये
तारे, तारे केवल
जो नये नये
सब नये नये
मिले देखते मुझको
एक लगन सारी रात

(२)

एक - एक वायु - लहर
गई अधर चूम
गई अधर चूम
उडे बाल काँपा तन
और गया झूम
और गया झूम
एक ध्यान लिये रहा
एक लगन सारी रात

(३)

होगा जब प्रात नवल
अरुण - वर्ण गात
अरुण - वर्ण गात
मेरी निशि का क्रन्दन
होगा अज्ञात
होगा अज्ञात
किरन - धौत चमकूँगा
कह कर लो गई रात

◆

आया प्रभात

◆

आया प्रभात
फैला प्रकाश
सज गया धरातल अम्बर तल
हो गई दृष्टि की गति अपार
प्रतिदिन क्रम से
सुन्दर श्रम से
जो होता रहता परिवर्तन
जिसमें जीवन का लास - हास
जिसमें भव की द्युति का प्रसार
आया प्रभात
दिन और रात
सौन्दर्य - स्नात
कञ्चन - वर्षा होती अविरल
तन - मन हो जाता तरल - तरल
सब दृश्य नवल होते पल - पल
ऐसा प्रभात
केवल प्रभात
ऋतुमती धरा
है स्वयंवरा
उसकी छवि का नूतन विकास
नव अलङ्कार अभिनव सुहास
दिग्दिक् व्यापी मंजुल सुवास
देता प्रभात
सुन्दर प्रभात

◆

जब जिस छन मै हारा

◆

जब जिस छन मैं
हारा, हारा, हारा
मैंने तुम्हे पुकारा

तुम आये
मुसकायें
पूछा—
कमजोरी है ?

बोला—नहीं, नही है
किसने तुमसे कहा कि मुझको कमजोरी है

तुम सुनकर
मुसकाये
मुझको रहे देखते
मुझको मिला सहारा
जब जिस छन मैं
हारा, हारा, हारा
मैंने तुम्हे पुकारा

◆

तुम्हें पुकार रहा है कोई

◆

(१)

अभी तुम्हारी शक्ति शेष है
अभी तुम्हारी साँस शेष है
अभी तुम्हारा कार्य शेष है

मत अलसाओ
मत चुप बैठो

तुम्हे पुकार रहा है कोई

(२)

अभी रक्त रग-रग मे चलता
अभी ज्ञान का परिचय मिलता
अभी न मरण - प्रिया निर्बलता

मत अलसाओ
मत चुप बैठो

तुम्हे पुकार रहा है कोई

◆

बढ़ रहे चरण
मार्ग पर बढ़ रहे चरण

◆

इधर उधर
जिधर दृष्टि गयी
दृश्य सुन्दरतर
क्षण क्षण पर
जो मन का
कर रहे एकान्त हरण
बढ रहे चरण
मार्ग पर बढ रहे चरण

बाधाएँ
आती हैं आएँगी
हारने के
रुकने के
कभी नही
किन्तु चरण

सम्भव विश्राम नही
जब तक जीवन है
रुक जाने का नाम नही
विश्राम देने को
आयेगा
कभी मरण
बढ रहे चरण
मार्ग पर बढ रहे चरण

◆

प्रिये बड़े ही मनोयोग से

◆

(१)

प्रिये बडे ही मनोयोग से
तुम्हे बनाकर उस शिल्पी ने
दिवस लगाकर रात लगाकर
तन की मन की शक्ति लगाकर
इस सोलहवे मधु सम्वत् तक
और सुधारा और सँवारा

(२)

उस शिल्पी ने बड़ी लगन से
बडे जतन से बडे चाव से
बड़ी भक्ति से बडे भाव से
प्रिये तुम्हे नख शिख तक तिल तिल
अथक उमङ्गों से क्षण-क्षण मे
और सुधारा और सँवारा

(३)

तुमको अन्धकार मे देखा
फिर दिन के प्रकाश मे देखा
बिजली चाँद लहर से उसने
तुमको मिला-मिलाकर देखा
देख-देखकर सोच-सोचकर
और सुधारा और सँवारा

(४)

तुम्हें प्रतिष्ठित किया धरा पर
अञ्चल मे इस वसुन्धरा का
निखिल विभव भर सर्वोत्तम कर
सुन्दरता की दीपशिखा - सी
लाकर तुम्हे सजाया जगको
और सुधारा और सँवारा

(५)

स्वर का सार तुम्हारा स्वर कर
वरदानों से भरकर अन्तर
आँखो मे बिजली, साँसों मे
मधुर गीत, अधरों में मधुस्मिति
बाँहों मे चिर-विजय बाँधकर
और सुधारा और सँवारा

(६)

तुमने रङ्ग दिया जीवन को
तुमने रूप दिया जीवन को
तुमने भाव दिया जीवन को
अपनी ही विभूतियाँ लेकर
तुमने भी इस जग जीवन को
और सुधारा और सँवारा

◆

एक पहर दिन आया होगा

◆

सरदी के ठिठुरे शरीर के
अङ्ग-अङ्ग को छूकर
सूरज की किरणो ने
बँधी मुट्ठियो को खोला
फिर अङ्ग की सिकुड़न हर कर
और रक्त का सञ्चालन कर
स्वस्थ बनाया

आँख उठायी
देखा, कुहरा कहीं नहीं है
नही भाग कर चला गया वह दूर दृष्टि से
क्षितिज शरण मे

बीस कदम पर उन पेड़ों को खडे निहारा
जो प्रकाश मे
सहज समीरण की किरणो से खेल रहे थे
देखा, उनकी श्यामल हरियाली में
हलके धुँएँ की तरह
कुहरा
किरणों से परास्त हो
छिप कर रहने का उद्योग अथक करता था

ऐसा लगता था कि
सुविस्तृत आसमान का
नीला-नीला रङ्ग छूट कर
पेड़ों के पत्तों-पत्तों मे
गिरते-गिरते उलझ गया है

चरखी पेड़की और किलॅहटा
गौरैया, महोख, बनमुर्गी
चारा चुनने दरवाजे पर
जाने कहाॅ-कहाॅसे आये
सूर्योदय से ही
चिर परिचित

◆

आज की शाम आयी

◆

आज की शाम आयी
आयी और चली गयी
शाम आयी चली गयी

चारों ओर चिन्ताएँ
चित्र अगणित
सारे रङ्ग खो गये
अँधेरा एक रहा शेष
कैसे कहूँ शक्ति नहीं

क्या-क्या उपहार शाम दे गयी
आज की शाम आयी
आयी और चली गयी

अगर मन खुला होता
नयन खोजते राह
चरण चलते जनपथ पर
हो न सका
बढ़ते अँधेरे में
एकान्त आज डूब गया

दिन की तरङ्ग औ
उमङ्ग सब खो गयी
आज की शाम आयी
आयी और चली गयी

◆

आगये तुम आज ?

◆

आ गये तुम आज ?
इतने दिन बिता कर आज !
आ ओ !!

बहुत दिन मैंने तुम्हारी राह देखी
बहुत दिन मैंने तुम्हारा दिन गिना है
बहुत सुख से प्रेम से चुपचाप मैंने
बहुत दिन तन्मय तुम्हारा गुण सुना है

राह वह, बदली, कहाँ से कहाँ पहुँची
जहाँ प्रायः मैं प्रतीक्षा किया करता था
दिन गये, आये, गये, आये—अनेक
क्या कहूँ—पावस, शरद, ऋतुराज कितने खोगये

गुण तुम्हारा इस तरह मैंने गुना
कि मैं केवल तुम्हारा गुण रह गया
आज जब मैं मैं नहीं हूँ
आगये तुम आज !
इतने दिन बिताकर आज !!
आओ !!!

◆

चाहे जो समझे यह दुनिया
मैंने तुमको प्यार किया है

◆

चाहे जो समझे यह दुनिया मैंने तुमको प्यार किया है
एक नजर मे अपना जीवन-अपना धन उपहार दिया है

कब मैंने दुख को दुख माना कब सुख में मन को भरमाया
अपने आकर्षण मे तुमने मुझे पथिक ।तैयार किया है

चलते-चलते देश तुम्हारे क्या-क्या पाया और गँवाया
तुम्हे सुनाऊँगा सब प्यारे सब कुछ तुम पर वार दिया है

दिन जाते राते आती हैं रग-रूप बदला करते हैं
परिवर्तन की इन लहरों मे मैंने तुम्हे निहार लिया है

मुझे तुम्हारी मुसकानों से जीवन का उत्साह मिला है
ध्यान तुम्हारा नही उतरता ममता ने लाचार किया है

तुम्हे न पाया तो क्या पाया, पाया तुम्हे क्या नही पाया
तुमको पाकर इस जीवन को प्यारे मैंने प्यार दिया है

आज नहीं कुछ और चाह है आज न कोई और राह है
तुमने पथ पर दिशा दिखाकर चलने का अधिकार दिया है

◆

मै जब कभी अकेला बिलकुल होजाता हूँ

◆

मै जब कभी अकेला बिलकुल होजाता हूँ
ध्यान तुम्हारा आता है लय होजाता हूँ
आँखे मूँदे तुम्हे देखता हूँः

तुम आती हो
पास खड़ी होकर
मुसकाता कहती होः
कहो कहाँ से आये हो परदेसी
कैसा है घरबार तुम्हारा
तुम्हे खबर है ?

दृश्य बदलता है
कि देखता हूँ फिर
मैं बीमार खाट पर लेटा हूँ मनमारे
सिरहाने बैठी हो तुम माथे पर अपना हाथ पसारे
पूछ रही हो
[दृग मे चिन्ता वाणी में विश्वास अटल है]
अब कैसी तबियत है !

आज तुम्हारी याद मुझे आयी है
बहुत दिनों के बाद तुम्हारी याद आज आयी है
एक मित्र हैं
अभी-अभी बस ब्याह हुआ है
अपनी परिणीता का फोटो दिखा रहे थे
दिखा रहे थे, बता रहे थे
आज तुम्हारी याद मुझे आई है
देख गया इतिहास कि जबसे एक सूत्र मे हम दोनों हैं

◆

अभी कहां मुझे शान्ति मिली ?

•

अभी मेरा मन
रण - क्षेत्र है
जहाँ युद्ध
युद्ध
और ललकार
विजय हार
प्रस्तर-प्राचीर से घिरा सुमन
कहाँ शान्ति मिली
किसी समय

चाहता हूँ
जय
प रा ज य की कल्पना से
हो ता है भ य
चाहता हूँ जय
मुझे अभी रूप की तृषा है
अभी रङ्ग चाहिए
अभी मुझे
आँखों का अर्थ जान पड़ता है
अभी कहाँ मुझे शान्ति मिली

•

कभी कभी सोचा करता हूँ

◆

(१)

कोई काम नही कर पाया
कभी किसी के काम न आया
जगती से अन्न-जल पवन लेता रहता हूँ
क्या मेरा जीवन जीवन है

(२)

पथ पर धूल उड़ा करती है
वह भी आखिर कुछ करती है
पर मैं-मेरे मन, तुम बोलो क्या करता हूँ
क्या मेरा जीवन जीवन है

(३)

और नहीं तो तत्त्व मुक्त हैं
वे विराट् मे प्रभा-युक्त हैं
मेरे पाँचो तत्त्व लजाओ मैं मरता हूँ
क्या मेरा जीवन जीवन है

(४)

बन्धन हो कल्याण के लिए
जीवन हो सम्मान के लिए
मेरे पञ्च-तत्त्व अपमानित, मैं धर्ता हूँ
क्या मेरा जीवन जीवन है

◆

उडो विहग बाँधे मत रहो पंख

◆

वह निशा चली गई
जो अब तक
रङ्ग रङ्ग के सपने देती रही
उड़ो विहग—

जिन किरणों ने
कोमल स्पर्श से
तुमको अपना प्रिय परिचय दिया
उनको अब अपनालो
उडो विहग—

अब प्रकाश ही प्रकाश
भूतल पर नभ तल पर
ये प्रकाश की लहरें
उज्ज्वल से उज्ज्वल तर
तिरते हैं जड-चेतन
चर - अचर
उड़ो विहग—

दिवा, यह तुम्हारी
सहधर्मिणी है
लक्ष्मी है
स्वागत कर उसका सम्मान करो
उड़ो विहग—

◆

गोविंद आज तुम नहीं हो

गोविंद,
आज तुम नही हो
नही हो गोविद !

चाहता हूँ : होते तुम
कितना अच्छा होता
सङ्ग होता साथ होता
आँखे देखती तो तुम्हे
बाँहे बाँधती तो तुम्हे
गोविद !

गोविद,
आ ज तु म न ही हो
कहाँ खोजूँ
कही नही हो

पता नही कहाँ हो
पता नही कहाँ हो
पता दोगे अपना ?—
तुम्हे पत्र लिखने की
इच्छा हो आती है बार-बार
कहाँ लिखूँ ?

पता नही कहाॅ हो
पता दोगे अपना ?

बिना कुछ कहे सुने
अकस्मात्
एक दिन
कहाॅ तुम चले गये

तुमको क्या यह भय था
मेरी बाहे बाॅध लेती
तुम्हे मुक्ति न मिलती
इतना अविश्वास था
फिर भी तुम मुझको विश्वास-पात्र कहते रहे
मेरी अनुपस्थिति मे तुम जो यों चल दिये
कुछ अच्छा नही किया

भैया,
आज तुम न जाने कहाँ हो

सोचता हूॅ
तुमको अचानक मैं कभी कहीं
पकड़ पाता
तो कहता :

देखा,
तुम्हे खोज लिया
खोज लिया और छिपो

किन्तु हाय
व्यर्थ सब विचार व्यर्थ सब उपाय

आ जाते हैं अनन्त अन्तराय
सुनता हूँ वह तुम्हारा रूप दग्ध हो चुका
गङ्गा की तरङ्गे राख भी समेट ले गई
अब भी तुम हो क्या, कही
कहाँ हो ?

आँखे तुम्हे देख अब नहीं पाती
कान में तुम्हारे स्वर नही पड़ते
बाँहे भी तुम्हारी अब न बनती हैं कण्ठहार

किन्तु मन बार बार
तुम्हारा ध्यान करता है
बाते भी होती हैं
प्रसङ्ग सब पुराने वही
किन्तु रस नित्य नया

भैया,
तुम कैसे हो
कहाँ हो
स्वस्थ हो कि नहीं
कभी कभी मेरी भी याद तुम्हे आती है
कहो, कभी मेरी भी याद तुम्हे आती है

•

राह पागया अब मै

◆

राह पागया
अब मैं

चलना है
चलता हूँ
दिन हो या रात हो
बाधाएँ
आये
अच्छा तो है साथ हो
समझ बूझ करके
इस ओर आगया
अब मै

रा ह पा ग या
अब मैं

चि न्ता क्या
शङ्का क्या
बु रा क्या अ के ला प न
चलना है
ग ति ब ल है
तन- गिरि में निर्भर मन
स्वर से सङ्गीत से
सहाय पा गया
अब मैं

रा ह पा गया
अब मैं

◆

आज मै अकेला हूँ

(१)

आज मैं अकेला हूँ
अकेले रहा नही जाता
रहा नही जाता

(२)

जीवन मिला है यह
रतन मिला है यह
धूल मे
कि
फूल मे
मिला है
तो
मिला है यह
मोल-तोल इसका
अकेले कहा नही जाता

(३)

सुख आये दुख आये
दिन आये रात आये
फूल मे
कि
धूल मे

आये

जैसे

जब आये

सुख दुख एक भी

अकेले सहा नहीं जाता

(४)

चरण हैं चलता हूँ

चलता हूँ चलता हूँ

फूल में

कि

धूल में

चलाता

मन

चलता हूँ

ओखी धार दिन की

अकेले बहा नहीं जाता

◆

फूल फूल पर तितली उड़ती

◆

फूल फूल पर तितली उडतो
फूल फूल रस लेती

दल दल पर चल
मधुर मनोहर
नृत्य नवल कर
वरती परिमल
परिचय-पथ विराम पल-पल के
पल-पल को गति देती

सूर्य-किरण मे
पवन-सुमन बन
करती नर्तन
मधु विचरण मे
लहर लहर से मिली लहर-सी
लहरो को स्वर देती

विचरण क्षण क्षण
पङ्खो पर तन
फूलों पर मन
रञ्जित कण कण
देश देश सन्देश सुमन का

सुमन सुमन को देती

रङ्ग रङ्ग जग
जीवन जगमग
सुरभि-ज्योति-मग
प्रेरित रग-रग
दृग-दृग का उल्लास वरण कर
लास-लहरियाँ लेती

◆

पथपर जगका जीवन

◆

पथपर प्रायः
प्रति पद गतिमे
सस्मृति सस्वर
शाप और वर
इस जीवन के
चिह्नित पथपर
पथपर रजकण से जन

वर्तमान का
क्षण-क्षण क्रम से
दृग मे आता
परिचय होता
जीवन मे
निश्चय भर जाता
पथपर मन का गुजन

◆

बादलों मे लग गई है आग दिन की

◆

बढ रही क्षण-क्षण शिखाएँ
दमकते अब पेड़ - पल्लव
उठ पडा देखो विहग-रव
गये सोते जाग
बादलो मे लग गई है आग दिन की

पूर्व की चादर गई जल
जो सितारों से छपाई
दिवा आई दिवा आई
कर्म का ले राग
बादलो मे लग गई है आग दिन की

जो कमाया जो गॅवाया
छोड उसका छोड सपना
और कर बल प्राण अपना
आज का दिन भाग
बादलों मे लग गई है आग दिन की

वास तज कर विचरते पशु
विहग उड़ते पर पसारे
नील नभ मे मेघ हारे
भूमि स्वर्ग पराग
बादलो मे लग गई है आग दिन की

◆

खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

◆

लहर लहर परिचय पराग - पूर्ण
दृश्य दृश्य अनुरञ्जित ज्योति चूर्ण
दिशा देश
धवल नवल
खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

क्या उमङ्ग जागरण की तरङ्ग
मद्य शक्ति स्रोत स्फूर्त अङ्ग-अङ्ग
तरु के दल
खग कल कल
खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

अन्धकार कारा से दृग छूटे
दृश्य देश विचरण को खुल टूटे
स्वर्णाञ्चल
धरणी कल
खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

विश्व के सरोवर में दिन का कमल
लहराता दृग दृगका लीला कमल
सदा अमल
नित्य नवल
खिला यह दिन का कमल
सुन्दर सहस्रदल

◆

पूर्व क्षितिज में तारा

◆

पेड़ों के पल्लव से ऊपर
उठता धीरे-धीरे ऊपर
अन्धकार - चन्द्रिका - स्नात
तरुओं पर जैसे पारा

रेखा - प्राय धूम्र घर-घर से
नील नील नभ चला नगर से
लहराता तरु ऊपर छाता
उसके ऊपर तारा

कार्तिक मास द्वादशी की तिथि
शुक्ला स्वयमागता यह अतिथि
मेरे मन को प्रिय विशेषतः
चन्द्र प्रभा से प्यारा

दक्षिण पवन धीर पद अविरल
चल किसलय तारक दल निश्चल
गगन चन्द्र चल परिचय बाँधे
चल स्थिर लगती धारा

मन्द प्रकाश तिमिर-अनुरंजित
शीतलता, तन स्थिर चंचल चित
भली धूल भी, गाढा कुहरा
दृश्य परम प्रिय सारा

पूरब से पश्चिम को ढलती
तारक माला यों ही चलती
चाप छिपाकर चिह्न मिटाकर
यह गति-क्रम है न्यारा

◆

गीत बन जाते हृदय के भाव

◆

गीत बन जाते हृदय के भाव
गीत बन जाते

तोड़ बन्धन और बाधा
गीत ये फिर फिर उमॅड़ते
उड़ स्वरो के पङ्ख पर फिर
वर्ण भास्वर गगन जाते
गीत बन जाते हृदय के भाव

जब नयन मे रूप आता
रङ्ग आता
तब तरङ्गित हम
मानस छोड उडते
नील नभ को पार करते
किस दिशा मे मगन जाते
गीत बन जाते हृदय के भाव

कौन परिचय कौन सञ्चय
जन्म कैसे किस तरह क्षय
कौन जाने
किन्तु भू के भाव ये
उड़ गगन जाते
गीत बन जाते हृदय के भाव

◆

प्राण-सखा, मनमें रहनेवाले

◆

(१)

नयन स्वप्न-सुमन चयन
करते स्मृति - वन - उपवन
तब तन - मन मधुर - मधुर
श्वास - श्वास बनता सुर
आते तुम नव विकसित
कर मे मञ्जुल गुलाब
मृदुल स्पर्श पलकों पर

स्वागत कहनेवाले
मन मे रहनेवाले

(२)

देखता हूँ नयन खोल
स्वप्नों से भी सुन्दर
सुन्दरता का निर्झर
बन जाता जीवन-स्वर
स्वप्न छोड उड़ता हूँ
नूतन धृति बल लेकर
आशा विश्वास लेकर

प्राण-सखा
मन में रहने वाले

(३)

तुम धीरे-धीरे ले चलते हो कर्मक्षेत्र
कठिन घोर कर्मक्षेत्र

दीप्त तेज कहते हो
साथी, यह कर्म कर

फिर मैं जम जाता हूँ
प्राण - सखा
मन मे रहने वाले,

(४)

देख श्रमित प्राण - सखा
आते हो मधुर - मधुर
फिर गुलाब नव लेकर
क ह ते प ल कें छू क र
देख - देख छवि सुन्दर
जा घ र वि श्रा म क र
स्वप्न देख अति सुन्दर

फिर गुलाब स्पर्शों से
हम तुम मिलने वाले
प्राण - सखा
मन में रहने वाले

◆

जीवन का निश्चय क्या

◆

(१)

एक-एक साँस से
जु ड़ा हु आ
एक-एक तार से
बु ना हु आ
कौन जाने कब टूटे
नि श्च य क्या
जीवन का निश्चय क्या

(२)

लहरो पर दीप दान
हो ता है
दीपक कबतक प्रकाश
ढो ता है
अक्षय रहता प्रकाश
परिचय क्या
जीवन का निश्चय क्या

(३)

हाथों से छूट
छूट जाता है
तारों से टूट
टूट जाता है
बन्धन, सम्बन्ध कौन
स ञ्च य क्या
जीवन का निश्चय क्या

◆

मिला निमन्त्रण प्राणों का

◆

(१)

परिचय-प्राप्ति नहीं अब बन्धन
नहीं सरणि विजडित अभिनन्दन
शेष नहीं सीमाएँ
टूट गई कारा जीवन की
अब तो स्वतन्त्रता जीवित धन

मि ला नि म न्त्र ण प्रा णों का
प्राणों को

(२)

नहीं अ व ज्ञा न य न न य न मे
एक कल्पना प्रति जन-मन मे
एक भाव की धारा
एक एक का भाव समझता
जीवन जन मे नही विजन में

मि ला नि म न्त्र ण प्रा णो का
प्राणो को

(३)

खुले मार्ग अब जीवन गतिमय
क्षण-क्षण मृदुल मधुर सङ्गतिमय
गई अपरता सारी
आलिङ्गित जीवन जनपद का
लहर-लहर निर्भर यति-गतिमय

मि ला नि म न्त्र ण प्रा णों का
प्राणों को

◆

दो दिन पाहुन जैसे रहकर बादल चलेगये वे

◆

बना बना कर
चित्र सलोने
यह सूना आकाश सजाया
राग दिखाया
रग दिखाया
क्षण क्षण छविसे चित्त चुराया
बादल चले गये वे

आसमान अब
नीला नीला
एक रग रस श्याम सजीला
धरती पीली
हरी रसीली
शिशिर प्रभात समुज्ज्वल गीला
बादल चले गये वे

दो दिन दुख का
दो दिन सुख का
दुख सुख दोनों सगी जग मे
कभी हास है
कभी अश्रु है
जीवन नवल तरंगी जग में
बादल चले गये वे
दो दिन पाहुन जैसे रहकर

◆

झीने श्वेत बादल आकाश में

◆

झीने श्वेत बादल आकाश में
दस बजे दिन के प्रकाश मे
नीलिमा गगन की झलकाते हुए
इधर उधर लहरों-से फिरते हैं

मन्द मन्द पछुआ हवा बह रही
लहरे उपजाती हुई बह रही
हरे भरे पेडो के पत्तों से
गेहूँ जौ मटर और सरसों से
खेलती हुई घर के द्वार पर
आकर मुझको छूकर लहराकर
और कही आगे को जाती है

खुले हुए अगो को सहलाकर
अपनी प्रभा से नव प्रकाश भर
बालिका-सी सरदी की धूप यह
तन मन को ताजा कर देती है

नीम बॉस पीपल लहटोरे के
पेड़ हरे निर्मल पत्तो वाले
खडे खडे बरसों का प्यार भरे
मुझको अविराम चॅवर करते हैं

इतना सा प्यार यह दुलार यह
पाता हूँ प्रतिदिन मैं बिना कहे बिना सुने
किसी का आभार भी बिना माने
पाता हूँ जैसे पुरस्कार यह

◆

पत्ते केवल पतझर आने पर ही नहीं झरा करते है

◆

पत्ते केवल पतझर आनेपर ही नही झरा करते हैं
जीवनका रस जभी सूख जाता है तभी बिना कुछ झिझके
बिना मूहूर्त्त-प्रतीक्षा के ही झर जाते हैं

इस जीवन का मोल बहुत है मोल कूतना सहज नही है
फिर भी इस जीवन का दुनिया में अपमान हुआ करता है
इतना जिसका पार नही है

कुछ बरसो के क्षण भङ्गुर जीवन को सुखी बनाने के ही
लिए लोग औरों के सुख को बल से हरण किया करते हैं
जीवन अमर अगर होता तो पता नही फिर क्या क्या होता
क्या क्या गुल खिलते दुनिया में

ऐसा नही दिखाई देता कहीं कि लोग प्रसन्न चित्त से
एक दूसरे के दुख को अपना ही जानें अपना मानें
और दुःख को कम करने के लिए समाज समान बनावे
धरती पर ही स्वर्ग बसावे

◆

चीन, महान् चीन

चीन, महान् चीन, मैं तुझको नमस्कार करता हूँ
पराधीन भारतवासी मैं नमस्कार करता हूँ
मेरा नमस्कार क्या तेरा गौरव अपना लेगा
चीन, महान् चीन, मैं तुझको नमस्कार करता हूँ

च्याङ्काई शेक का वह कथन मुझे याद आता है
वीरो, शस्त्र नही है तो कुछ बात नही है
चिन्ता छोड़ो, यह शरीर ही शत्रु-गनों को अर्पित कर दो
अपने अस्थि मास से ही तुम सब बैरी से लड़ते जाओ
मृत्यु तुम्हारी फल लायेगी चीन स्वतत्र रहेगा भूपर
च्याङ्काई शेक का वह कथन मुझे याद आता है

हुई हार पर हार लड़ाई रुकी नही पर कभी किसी दिन
पॉच साल गत हुए साल के गिने तीनसौ पैंसठ के दिन
मगर चीनके नौजवान जिनको मरनेका स्वाद मिलगया
लड़ते मरते चले जारहे कभी उन्होने गिने नही दिन

स्वतन्त्रता का मोल प्राण है प्राण चढाने पर मिलती है
सहज नही है यह स्वतन्त्रता नही हाट मे यह मिलती है
ताकत हो उत्साह हो बढो स्वतन्त्रता कुछ दूर नही है
स्वतत्रता या मौत नही तो दोनों साथ साथ मिलती है

◆

सहज सुन्दर मन्द तारों का पुनीत प्रकाश

◆

सहज सुन्दर मन्द तारों का पुनीत प्रकाश
आज सारी रात निर्मल देसका आकाश

रात काली होगई थी चौथ का था चाँद
बन गये थे व्योम में तारे प्रभा की याद

तारकों की ज्योति मे थी रात्रि दृश्य विशेष
कालिमा सब विश्व की थी परिव्याप्त अशेष

पूर्व मे समुदित प्रतीची क्षितिज मे अविराम
गमनशील पहुँच वहाँ करने गये विश्राम

गाँव का आकाश निर्मल धूम्रहीन अतीव
तारको को कर रहा था ज्योतिपूर्ण सजीव

किरण उनकी मिल नयन से कर रही थी बात
बात वह सुनती खिसकती जा रही थी रात

पेड इमली का खड़ा था मौन दीर्घाकार
पत्र शाखा गुप्त सब था बस प्रकट आकार

अन्तराल तिमिर-प्रपूरित भेद कर दो एक
तरल तारे कर रहे थे किरण से अभिषेक

मौन इतना था चहुँ ओर अपरम्पार
हृदय-धड़कन कान सुनते सजग बारम्बार

उस अभेद्य तमिस्र में ये नयन थे निरुपाय
तारकों से माँगते थे ज्योति अति असहाय

रात सारी रात आँखो में गई कट रात
जाग कर झेले विचारों के विपुल आघात

ध्यान सबका स्वप्न सबका स्वस्थ हो था मौन
तिमिर बारम्बार जैसे पूछता था कौन

◆

सघन अँधेरी रात

◆

नयन खुले बेकार
सहन करने को तिमिर प्रहार
सम्मुख सुन्दर अतिथि
स्वप्न आये जब करने बात
प्रेम से आये करने बात

कुछ भी दृष्टि न आता
दृग खुलते तम-रज भर जाता
स्नेह सहानुभूति से
तारे कर से छूते गात
प्रेममय कर से छूते गात

इस तम से क्या आशा
शयन स्वप्न बल की परिभाषा
बँधन बल हर लेता
निर्बल को देता आघात
निरुत्तर असहनीय आघात

दुष्कर समर नियति का
चलता बल न जहाँ गति मति का
श्वास समय सहचर हैं
जिसके अनुचर उसका प्रात
चिह्न अनिच्छित उसे
नहीं दे सकती रे यह रात
सघन अँधेरी रात

◆

आज का दिन बादलों मे खोगया था

◆

आज का दिन बादलों मे खो गया था
दृष्टि मे आकर शशक जैसे
चपल से चपल होकर
सघन पत्र-श्याम वन मे खो गया था

वायु भूपर और ऊपर
नवल लहराते हुए घन श्याम सुन्दर
कही धौरे कही कारे
लहर तिल तिल पर सँवारे
मधुर मधुर सजीव गर्जन से
ध्वनित जग हो गया था

पङ्क हो पथ अङ्क में रज कण मिले कल
आज सूखे मार्ग निर्मल
सतत आग्रहशील आकर
पवन शीतल स्पर्श कर कर
अ व अ व ज्ञा पात्र
अति परिचय-जनित वह हो गया था

दूर से, मेरे क्षितिज के पार, पश्चिम मे कही से
सतत वर्षण-शील जलदों को चला कर
मधुर गर्जन-शील कर बिजली जगा कर
पथ-जनित निज शुष्कता
घन-सीकरो के स्पर्श हर
उच्छ्वसित पछुवा हवा तरु, शस्य और सरोवरों को
अनवरत गति की कहानी साँस-सी लेकर सुना कर
मधुर सञ्चित स्नेह-सी करती समर्पण मौन अपना

आज मेरे पास आयी
आगया मन
जो स्मरण मे प्रिय प्रवासी हो गया था,

◆

संग पवन के चाल पवन की
आऊँ मै लहराता आऊँ

◆

प्रिय, मैं जलधर-सा धरती को
दुखी देखकर तप्त देखकर
शीतल छाया बन छा जाऊँ
उसका रूखा - सूखा अ ञ्च ल
हराभरा कर देने के हित
गल गल जाऊँ मिट मिट जाऊँ

उमॅड़ घुमॅड़ कर औ' घिर घिर कर
कटु अकाल पर और ताप पर
आऊँ गरज गरज कर आऊँ
मेरे आये से सुख आये
मेरे मिटने से सुख आये
आऊँ मैं चिर सुख बन आऊँ

मैं दुखियों की विपति-व्यथा को
दूर करूँ यह जीवन देकर
जीवन के सङ्गीत सुनाऊँ
अञ्जन होकर मोहन होकर
अपना होकर सपना होकर
लोचन लोचन मे बस जाऊँ

◆

जीवन का एक लघु प्रसंग

◆

तब मैं बहुत छोटा था
कौन साल कौन मास और कौन दिन था
यह सब कुछ याद नही
जानता भी नहीं था
पढता था
नाम और ग्राम लिखना आगया था

स्कूल जाने का समय हो आया था
बहुत व्यग्र बूआ के पास खड़ा खड़ा मैं
उससे किताबे नई लेने के लिए पैसे माँग रहा था

ने पूछा : जो किताब अभी ली गई थी उसको क्या पढ लिया
कहा : कब न पढा ! अब तो नई चाहिए, और सब खरीद चुके
दरजे मे जितने हैं केवल मैं बाकी हूँ
ने कहा : अभी वही पढो, फिर पैसे दूँगी, कुछ दिन बीते
ले जाना नई लेना
कहा : बूआ यह कैसे हो सकता है वह दरजा पास कर चुका हूँ मैं
अब नई लेनी हैं किताबे पुरानी बेकार हैं
ने कहा : किसी लड़के से माँग लो ना तुमसे जो आगे पढता रहा हो
वह दर्जा पास कर चुका हो अब जिसमे तुम नये नये आये हो
चिढ करके कहा : बूआ वे किताबे अब बदल गई
ने पूछा : क्यों ?
जानूँ—मैंने कहा
स्वगत बूआ बोलीं—सभी पैसे कमा रहे हैं
पूछा : बूआ क्या कहती हो, दाम मुझे देती हो ?

बूआ ने कहा : आज मदरसे तुम चले जाओ, मास्टर से कह देना .
पैसे आज नही मिले, कल तक मिल जायँगे

तब तक माँ आई उसने कहा : रोज-रोज कहती हूँ पढ-लिख कर क्या होगा
पढना अब बन्द करो इसका, घर काम करे, पढना हमारे
नही सहता,पर बात मेरी कौन सुनता है
रान-परोसी कहते हैं, लडका इन्हे भारी है, इसी राह खोरहे हैं

बूआने मुझसे कहा चिल्लाकर : जाओ तुम, नही तुम्हे देर होगी, सब चले
गये होंगे

लेकिन मैं बूआ के पीछे जा खडा हुआ, पूरी बात सुनना मैं चाहता था,
गया नही

बूआ ने कहा : धन्य बुद्धि, जो नही पढते वे सब क्या अमर हैं ?

माँ ने कहा : देखते हुए मक्खी लीलते नहीं बनता पढ लिखकर ही आखिर
फलाने विक्षिप्त हुए, पढते-लिखते ही तीन - चार जने मरगये
तुमको तो जैसे कही पत्ता भी नही खड़का गिरते हुए थोड़ा भी

बूआने कहा : दुलहिन [माँ को वे यही कहा करती थी] इस बच्चे को
मैंने बडी श्रद्धा से प्रेम से निष्ठा से विद्या को दान कर दिया है जान बूझकर
दान कैसे फेर लूँ, ऐसा कभी नही हुआ — विद्या माता ही अब इसको
निरखे-परखे
रक्षा और पालन पोषण करे !

◆

धूप सुन्दर धूप मे जग रूप सुन्दर

◆

धूप सुन्दर
धू प   मे
जग रूप सुन्दर
स ह ज सु न्द र

व्योम निर्मल
दृश्य जितना
स्पृश्य जितना
भू मि का वैभव
तरङ्गित रूप सुन्दर
सहज सुन्दर

तरुण हरियाली
निराली शान शोभा
लाल पीले
और नीले
वर्ण वर्ण प्रसून सुन्दर
धूप सुन्दर
धूप में जग रूप सुन्दर

ओस कण के
हार पहने
इन्द्र धनुषी
छबि बनाये
शस्य तृण
सर्वत्र सुन्दर
धूप सुन्दर
धूप में जग रूप सुन्दर

◆

ढल गया दिन धूप शीतल होगयी

◆

ढल गया दिन
धूप शीतल हो गई

धूप शीतल हो गई
कुछ रंग बदला
रूप बदला
भाव में
चल चेतना-सी खो गई
ढल गया दिन धूप शीतल हो गई

भूमि को मैं देखता हूँ
ध्यान से सम्मान से
कृषि- कला के फूल-फल से
हरित स्वर्ण अनूप वर्ण-तरंगवाली हो गई
ढल गया दिन धूप शीतल हो गई

आज निर्मल नील नभ के
चिर सुषम सम्पर्क से
पृथ्वी सुनहली स्वर्ण चम्पक
सुघर चर सस्वर सजीले
अचर नीरव-से रँगीले
नयन को देती निमन्त्रण
धन्य कण-कण को बनाकर
दिव्य सुन्दरता धरा पर आगई
पुतलियों मे ज्योति स्वर्गिक हो गई
ढल गया दिन धूप शीतल हो गई

रूप मे स्वर मे
सुवर्ण तरग आई
प्राप्त गति मे प्रीति
जीवन में मधुर आसक्ति आई
ढल गया दिन धूप शीतल हो गई

◆

स्तब्ध नीरव रात

◆

चाँदनी-चर्चित
परम प्रार्थित
समर्पित
स्नेह-सी यह रात
स्तब्ध नीरव रात

क्षितिज है संकीर्ण
कुहरे से सघन अवरुद्ध
दिन जैसा नहीं विस्तीर्ण
वस्तुओ का रूप
अब तो और कुछ है
वस्तुओ का रग
अब तो और कुछ है
मन्द तारे
चमचमाती
चाँदनी की रात
स्तब्ध नीरव रात

शान्त बिलकुल शान्त
चर अचर सब
मौन कितनी रात
स्तब्ध नीरव रात

◆

चम्पा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

•

चम्पा काले काले अच्छर नही चीन्हती
मैं जब पढ़ने लगता हूँ वह आजाती है
खड़ी-खडी चुपचाप सुना करती है
उसे बड़ा अचरज होता है :
इन काले चिह्नो से कैसे ये सब स्वर
निकला करते हैं

चम्पा सुन्दर की लड़की है
सुन्दर ग्वाला है : गायें-भैंसे रखता है
चम्पा चौपायो को लेकर
चरवाही करने जाती है
चम्पा अच्छी है
चचल है
नटखट भी है
कभी-कभी ऊधम करती है
कभी-कभी वह क़लम चुरा देती है
जैसे-तैसे उसे ढूँढकर जब लाता हूँ
पाता हूँ—अब कागज ग़ायब
परेशान फिर होजाता हूँ

चम्पा कहती है :
तुम कागद ही गोदा करते हो दिन-भर
क्या यह काम बहुत अच्छा है ?
यह सुनकर मैं हँस देता हूँ
फिर चम्पा चुप हो जाती है

उस दिन चम्पा आई, मैंने कहा कि :
चम्पा, तुम भी पढ लो
हारे-गाढ़े काम सरेगा
गाँधी बाबा की इच्छा है—
सब जन पढना-लिखना सीखे
चम्पा ने यह कहा कि :
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गाधी बाबा अच्छे हैं
वे पढने-लिखने की कैसे बात कहेगे
मैं तो नही पढ़ूँगी

मैंने कहा कि चम्पा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा तुम गौने जाओगी
कुछ दिन बालम सग - साथ रह चला जायगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर पर है कलकत्ता
कैसे उसे सँदेसा दोगी
कैसे उसके पत्र पढोगी
चम्पा पढ़ लेना अच्छा है !
चम्पा बोली : तुम कितने झूठे हो, देखा,
राम, राम, तुम पढ-लिख कर इतने झूठे हो
मैं तो ब्याह कभी न करूँगी
और कहीं जो ब्याह हो गया
तो मैं अपने बालम को सग-साथ रखूँगी
कलकत्ता मैं कभी न जाने दूँगी
कलकत्ते पर बज्र गिरे ।

◆

सघन पीली ऊर्मियों मे बोर

◆

सघन पीली
ऊर्मियों मे
बोर
ह रि या ली
स लो नी
झू म ती स र सों
प्रकम्पित वा त से
अपरूप सु न्द र
धूप सुन्दर

मौ न ए का की
त र ङ्गे दे ख ता हूँ
दे ख ता हूँ
य ह अ नि र्व च नी य ता
ब स दे ख ता हूँ
सो च ता हूँ
क्या क भी
मैं पा स कूँ गा
इ स त र ह
इ त ना त र ङ्गी
और निर्मल
आदमी का
रूप सुन्दर
धू प सु न्द र
धूप में जग रूप सुन्दर
सहज सुन्दर

◆

भस्मावृत लूकी-सा

◆

भस्मावृत लू की - सा
मैं इस अन्धकार मे
पड़ा हुआ हूँ
अपनी चेतनता की ज्वाला में
परिसीमित
उठ कर

ऊपर अन्धकार से भरे हुए इस आसमान में
मैं निहारता
लूक टूटते
जैसे अन्धकार के गढ पर
ये प्रकाश के तीर छूटते
देख देख कर
मुझे ज्योति की जीवन की अनिवार्य विजय का
दृढ विश्वास प्राप्त होता है
इतने - इतने बलिदानों की
अकृत-कार्यता
सदा न सम्भव

जिन लोगो ने अन्धकार मे
जीवन का उत्सर्ग किया है
कर एकत्र परम निष्ठा से
अपना प्राप्त प्रकाश दिया है
अन्धकार के क्षुद्र ग्रास से
जो झलके
वे सब महान् हैं
अपनी मनः शक्ति तत्परता के

अन्धकार मे देख रहा हूँ
जीवन की बनती रेखाएँ
आये बाधाएँ सब आये
पर न मिटेगी किसी काल में
ये बनने वाली रेखाएँ

◆

जिस समाज में तुम रहते हो

◆

जिस समाज मे तुम रहते हो
यदि तुम उसकी एक शक्ति हो
जैसे सरिता की अगणित लहरों मे
कोई एक लहर हो
तो अच्छा है

जिस समाज मे तुम रहते हो
यदि तुम उसकी सदा सुनिश्चित
अनुपेक्षित आवश्यकता हो
जैसे किसी मशीन में लगे बहु कल-पुर्जों मे
कोई भी कल-पुर्जा हो
तो अच्छा है

जिस समाज में तुम रहते हो
यदि उसकी करुणा ही करुणा
तुमको यह जीवन देती है
जैसे दुर्निवार निर्धनता
बिलकुल टूटा फूटा बर्तन घर किसान के रक्खे रहती
तो यह जीवन की भाषा मे
तिरस्कार से पूर्ण मरण है

जिस समाज मे तुम रहते हो
यदि तुम उसकी एक शक्ति हो

उसकी ललकारों में से ललकार एक हो
उसकी अमित भुजाओं में दो भुजा तुम्हारी
चरणों मे दो चरण तुम्हारे
आँखों मे दो आँख तुम्हारी
तो निश्चय समाज-जीवन के तुम प्रतीक हो
निश्चय हो जीवन चिर-जीवन।

◆

स्वस्थ तन स्वस्थ मन हो

◆

स्वस्थ तन
स्वस्थ मन
हो
तो जीवन
जीवन

जिस तरह
आजकल
तन दुर्बल
उसी तरह
मन दुर्बल
दुर्बलता मे नहीं
जीवन जीवन

पराधीन भारत में जन-जीवन
वारि मीन का जैसे प्राण-केश
कारण पर निर्जीवन अखिल देश
प र मु खा पे क्षी मि ट्टी जी व न

जहाँ लोग औरों के साधन हैं
प्राप्त भोग, चल कि अचल बस धन हैं
वहाँ नहीं जीवन चेतन-जीवन

◆

छाती पर चढ़ा हुआ

◆

छाती पर चढा हुआ अन्धकार का पहाड उतर गया
और यह प्रभात हुआ
कञ्चन बरसाता हुआ सुन्दर प्रभात हुआ
हलका हलका स्पर्श वायु का मिला
जैसे परदेसी आत्मीय का
सीमा मे आने का प्रियतर सन्देश मिला

शय्या से जीवन का बल लेकर
श्रान्ति-क्लान्ति सब हर कर
उठा मैं नया ही उत्साह लेकर
दिन का प्रतीक्षाकुल चिर - वाञ्छित
गुलाबी सुनहला प्रकाश-पूर्ण
जैसे निमन्त्रण मिला
अद्वितीय मुझको आह्लाद हुआ
कञ्चन बरसाता हुआ सुन्दर प्रभात हुआ

खुले सब खिले सब
बन्ध तोड़ कर तम का आँखों में मिले सब
सबका अभीष्ट यह प्रभात—सुन्दर प्रभात हुआ

◆

आजकल लड़ाई का ज़माना है

◆

आजकल लड़ाई का जमाना है
घर, द्वार, राह और खेत मे
अपढ-सुपढ सभी लोग
लडाई की चर्चा करते रहते हैं

जिन्हे देश-काल का पता नही है
वे भी इस लड़ाई पर अपना मत रखते हैं
रूस, चीन, अमेरिका, इंगलैण्ड का
जर्मनी, जापान और इटली का
नाम लिया करते हैं
साथियों की आँखों मे आँखे डाल डाल कर
पूछते हैं, क्या होगा ?

कभी यदि हवाई जहाज ऊपर से उड़ता हुआ जाता है
जबतक वह क्षितिज पार करके नही जाता है
तबतक सब लोग काम-धाम से अलग होकर
उसे देखा करते हैं

अण्डे, बच्चे, बूढ़े या जवान सभी
अपना-अपना अटकल लड़ाते हैं :
कौन जीत सकता है
कभी परेशान होकर कहते हैं :
आखिर यह लडाई क्यों होती है
इससे क्या मिलता है

हाथ पर हाथ धरे हिन्दुस्तान की जनता बैठी है
कभी-कभी सोचती है : देखो, राम या अल्लाह

किसके पल्ले बाँधते हैं हम सबको
हिन्दुस्तान ऐसा है
बस जैसा तैसा है

◆

भोरई केवट के घर

◆

भोरई केवट के घर
मैं गया हुआ था बहुत दिन पर

बाहर से बहुत दिनो बाद गाँव आया था
पहले का बसा गाँव उजड़ा सा पाया था

उससे बहुत-बहुत बाते हुई
शायद कोई बात छूट नहीं सकी
इतनी बाते हुई

भीतर की प्राणवायु सब बाहर निकाल कर
एक बात उसने कही
जीवन की पीडा भरी
बाबू, इस महँगी के मारे किसी तरह अब तो
और नही जिया जाता
और कबतक चलेगी लडाई यह ?

ऐसा जान पडा जैसे भोरई निरुपाय और असहाय
आकण्ठ दुःख के अभाव के समुद्र मे पडा हुआ
उसकी विकट लहरों के सह रहा थपेडे था

इस अकारण पीड़ा का भोरई उपचार कौनसा करता
वह तो इसे पूर्व जन्म का प्रमाद कहता था
राष्ट्रो के स्वार्थ और कूट नीति
पूँजी पतियों की चाले
वह समझे तो कैसे !

अनपढ देहाती, रेल-तार से बहुत दूर
हियाई का बाशिन्दा
वह भोरई

◆

एकाधिकार के पंजे मे

◆

ए का धि का र के पञ्जे मे
जीवन के सारे व्यापार
धीरे-धीरे अब
समाते चले जा रहे हैं
जैसे जैसे लडाई का वेग, बल और दिन
बढता चला जाता है
वैसे वैसे एकाधिकार भी धरातल पर
बढता चला जाता है
अधिकाधिक सख्या मे लोग इधर आये दिन
सर्वहारा होते चले जा रहे हैं
और पूँजी खीच खीच करके सब दुनिया की
मुठ्ठी-भर पूँजीपति पहले से अधिक मोटे
होते चले जा रहे हैं

यह क्रम रुकेगा नही शोषण थम सकेगा नही
जब तक चढा-ऊपरी का राज्य है
तब तक यह मनुष्य - जीवन फूल - फल सकेगा नहीं
पूँजीवाद जिस डाल पर बैठता है
वही डाल काटता है, सर्वनाश करता है स्वयमेव
अतुलित धन-राशि पर
साँप के समान जब कुछ पूँजीपति
अपने विष-बल का आतङ्क फैलाते हुए
शेष रह जायँगे
तब जनता उनसे उस धन का उद्धार करके
जीवन के नये भवन
नि र्मा ण क रे गी ।

◆

इन दिनों मनुष्य का महत्त्व कोई नहीं है

◆

इन दिनो मनुष्य का महत्त्व कोई नही है
मूल्य गिर गया है अब मनुष्य का
सिन्धु मे बिन्दु का जो स्थान है
वह भी स्थान नही है मनुष्य का

ऐसा क्यो

पूँजीवाद का इतिहास कहता है
साम्राज्यवाद घोषित करता है
कुल का अभिमान और सुख-सग्रह
करने का वैयक्तिक उत्साह इसका उत्तेजक है
कोई सम्बन्ध-मर्म कही नही
अलग अलग सब अपने सुख दुख मे बहते हैं
और जो प्रहार उन पर होते हैं सहते हैं

पूँजीवाद ने महत्त्व नष्ट कर दिया सबका
जीवन का, जन का, समाज का, कला का
बिना पूँजीवाद को मिटाये किसी तरह भी
यह जीवन स्वस्थ नहीं हो सकता
ज्ञान-विज्ञान से किसी प्रकार
कोई कल्याण नहीं हो सकता

◆

प्रखर शिशिर की वायु लहराती

◆

हर कर तरुओं की नीरवता
हर कर चिर अभिशप्त अचलता
भर कर प्राण-मयी चञ्चलता
देकर निज स्वर
अतिशय सुन्दर
अग जग को कर
प्रखर शिशिर की वायु ल ह रा ती

शस्य लता तरु के चुन चुन कर
पात पुराने गिरा गिरा कर
करती सुन्दर और मनोहर
सजकर आती
प्रिय वसन्त के
गीत सु ना ती
प्रखर शिशिर की वायु ल ह रा ती

मेघों को संचालित करती
उनके गर्जन का स्वर हरती
भू के कर्ण-रन्ध्र मे भरती
वर्षा करती
विद्युत द्युति का
अञ्जन करती
प्रखर शिशिर की वायु ल ह रा ती

परिवर्तन, सन्देश सुनाती
गति के गीत प्रगति से गाती
नूतन सृजन साथ ले आती

नया नया मन
नयी लहर का
चेतन जीवन
प्रखर शिशिर की वायु ल ह रा ती

◆

प्रिय प्रभात तुम आये आये

◆

प्रिय प्रभात तुम आये - आये
नित्य मनोहर नूतन नूतन

चिर सहचर तुम आये-आये
तुमने एकाकीपन हर कर
नयी तरङ्ग हृदय मे भरकर
मिला दिया जन से जीवन को
स्मिति का मधु आकर्षण भरकर
निर्जीवन का जीवन, जीवन
का अमृत तुम लाये - लाये

तुम आश्वासन बनकर आये
नयनो मे प्रकाश बन आये
रूप-रूप मे तुम लहराये
सुन्दरता को सङ्ग लगाये
अपनी प्राण-प्रभा से जड मे
चेतन मे तुम छाये छाये

दृग मे स्वर्णाञ्जन से लगकर
दृश्य-दृश्य में झलके जगकर
आये सजकर सबको सजकर
तुम सुन्दरता का लहराता
सिन्धु सङ्ग मे लाये-लाये

स्वागत, स्वागत, सखे तुम्हारा
चिर स्वागत है सखे तुम्हारा
कितना रङ्ग - रूप देता है
जीवन को चिर स्नेह तुम्हारा
स्निग्ध सुवर्ण अरुण जीवन के
विजय - रूप तुम आये आये

◆

सन्ध्या के मौन में

◆

सन्ध्या के मौन मे
स्वर
दिवाचर के निशाचर के
स्थलचर के जलचर के नभचर के
एक पल को जा समाये
सन्ध्या के मौन मे स्वर

जब प्रतीची के क्षितिज के वदन-मण्डल पर
गुलाबी स्निग्ध मधु-मुसकान आई
वशीकरण-प्रवीण-मधु-मुस्कान आई
खो गये भव-चेतना स्वर नयन का रूप धर कर
खो ग ये
सन्ध्या के मौ न में स्व र

सबने अपना-अपना दिन देखा
एक - एक चित्र एक - एक रेखा
सबने देखा समझा फिर देखा
फिर स्थल पर
अवनत शिर
पथ पर प्रति अक देखते हुए
जन-जन ने आगामी कल का सौन्दर्य देखा
मन-मन में क्षण-क्षण की रूप-कल्पना करके पहुँचे घर
खोगये सन्ध्या के मौन मे स्वर

◆

तुम्हे प्रभात पुकार रहा है राही !

तुम हरदम के चलने वाले
सम्मुख तमी अपार देखकर
तुमने अस्त्र - शस्त्र निज डाले
कमल - समान बन्द हो गये
सान्ध्य - समीर - लहर से कँपकर
किरण-करो से मधुर स्पर्श कर
देश दिखा कर मार्ग दिखा कर
जगा - जगा कर
तुम्हे प्रभात पुकार रहा है राही !

तुमने घर छोडा पुर छोड़ा
पुरजन छोडे परिजन छोडे
सुख - सुविधाओं से मुख मोड़ा
अपने प्रेय ध्येय पर बलि हो
ममता के सब बन्धन तोडे
सहज प्राप्त आश्वासन छोडे
निखिल वृत्तियों का बल जोड़े
पथ पर आये
तुम्हे प्रभात पुकार रहा है राही !

स्नेह-नम्र यह तरु की छाया
तुमने जिसके नीचे बस कर
रात बिताई स्वप्न सजाया
स्वप्नो को चरितार्थ करो अब
आगे बढो कमर को कसकर
तन - मन देकर
तुम्हे प्रभात पुकार रहा है राही !

अब अदृष्ट का जाल कट गया
यह सुवर्ण अवसर आया है
अन्धकार का गर्त्त पट गया
मनोकामना सा पाया है
तुमने जो प्रकाश आया है
यह अलभ्य सहचर आया है !
प्रिय आया है
तुम्हे प्रभात पुकार रहा है रानी !

◆

अगर हारकर विचलित होकर तुम उद्यम को छोड न बैठे

◆

अगर हार कर विचलित होकर तुम उद्यम को छोड़ न बैठे
यह जीवन है, इसे जीवनी-शक्ति कहा करती है दुनिया
बाधाएँ तो पथ का धन हैं

बन्धु, पराजय भी मिलती है किसी वीर को समर भूमि मे
उद्योगी को जीवन मे क्षण क्षण प्रयोग करना पडता है
गिर गिर कर उठना पड़ता है उठ उठकर चलना पडता है

तुम्हे तुम्हारी साँसे ही आने - जाने का अर्थ बताती
पूर्ण चेतना से जीवन का सञ्जीवन प्रिय मन्त्र सिखाती
सङ्ग साँस के चलते चलते, हाथ चलाकर, पैर चला कर
अपने प्रेय श्रेय तक, प्रिय हे, बढ़ते जाओ, बढते जाओ

तन तो मन का एक यन्त्र है
सिद्धि - सफलता, मनः शक्ति के उद्‌बोधन का मूल मन्त्र है
तुम मन को निर्बल न बनाओ, हारो तो मत उसे हराओ
गिर कर स्वय उसे न गिराओ
उसे उठाओ सबल बनाओ
मन से ही सञ्चालित जग के निखिल तन्त्र हैं

◆

लौटने का नाम मत लो

◆

चल रहे हो तो चलो
विश्राम का भी नाम मत लो
साँस चलती है अगर रुक जाय
तो बस मौत आयी
जिन्दगी की सौत समझो मौत आयी
साँस से चलते रहो प्रिय
ठहरने का नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

तुम ठहरते हो, समय कब है ठहरता
सतत चलता, नही रुकता, नहीं रुकता
सतत चलता
गति - विमुख होकर कभी
विश्राम का प्रिय नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

तुम अगर पिछड़े, सदा पिछडे रहोगे
फिर न बढते हुए अपने साथियों को
पा सकोगे, चल थकोगे
प्रिय अकेले बैठ रहने का
किसी क्षण नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

जिस लहर मे हो समय की वह न छोड़ो
जोर तन - मन का लगा कर
वह न छोड़ो, वह न छोड़ो
सकल ममता - सूत्र तोड़ो

प्रिय अलग होकर कभी
आराम का भी नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

विजय होगी, तुम अगर चलते रहे तो
विजय होगी, तुम अगर बढते रहे तो
निरन्तर बढते रहो
अलग होकर कर्म-पथ से
प्रिय, विजय का नाम मत लो
लौटने का नाम मत लो

◆

मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

◆

जो अपनी धुन पर न्यौछावर अपना सब कुछ कर देते हैं
जग-जीवन के लिए स्वय को निर्भय हो बलि कर देते हैं
जिनका कदम कदम जीवन की जय यात्रा का प्रिय प्रतीक है
मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

जिनका स्वर जीवन का स्वर है जन जन को हर्षाने वाला
जन जन की चेतना जगा कर जग-जीवन समझाने वाला
जीवन का प्रताप जिनके प्रत्येक कार्य से सन्दीपित है
मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

जिन लोगों ने सघर्षों मे कभी हार को हार न माना
मरते रहे परन्तु जिन्होने मृत्यु-प्रहार प्रहार न माना
जिनके अप्रतिहत साहस की क्षण क्षण लिखते रहे कहानी
मैं सगर्व - सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

जिन लोगों ने जीवित रहते कभी न अत्याचार सहा है
अत्याचार से नहीं जिनका रञ्चमात्र सम्बन्ध रहा है
जिनका तेज तेज औरों का बन्धु - भाव से रहा बढाता
मैं सगर्व सोल्लास निरन्तर उन लोगों का गुण गाता हूँ

◆

मौत यदि रुकती नहीं तो जन्म भी रुकना कहाँ है

◆

मौत यदि रुकती नहीं तो
जन्म भी रुकता कहाँ है

एक क्षण यदि और है तो
दूसरा क्षण और कुछ है
रूप पल पल पर बदल कर
और कुछ है और कुछ है

यह अखण्ड विधान जग मे
रञ्च भी झुकता कहाँ है

यदि तुम्हारे वक्ष मे है माँस
बाँहो मे भरा है बल
काल - सरिता की लहर पर
आँक दो गति - चित्र निर्मल

सिन्धु समझो बिन्दु पर वह
बिन्दु मे चुकता कहाँ है

दुःख केवल दुःख ही यदि
सत्य है तो और क्या है
अश्रु सिञ्चित हास पुलकित
जिन्दगी फिर और क्या है

जिन्दगी का मोल केवल
मौन से चुकता कहाँ है

◆

तुमने मुझे पुकारा

तुमने मुझे पुकारा
प्रिय प्रभात ओ
तुमने मुझे पुकारा

अन्धकार मे खोया था
सोया था
अपनी हारों को निहार कर
विचलित हो कर
शेष शक्ति को
शेष श्वास को
निरख रहा था
परख रहा था
इस जीवन को समझ रहा था
तब तक आकर
अमृतमयी स्मिति से मुसकाकर
तुमने मुझे पुकारा
प्रिय प्रभात ओ, तुमने मुझे पुकारा

अन्धकार से अपने कर से तुमने मुझे निकाला
नूतन जीवन डाला
किया प्रकाशित विश्व भुवन को
मेरे मन को
नयनों को बल दिया कण्ठ को वाणी
कर्म-तरङ्गित हुए प्रफुल्लित प्राणी प्राणी
एक एक क्षण एक एक कण
मधुर ज्योति के सागर मे लहराये
जीवन के स्वर

सङ्घर्षों के अप्रतिहत स्वर
विजय-पराजय के स्वर
जग-जीवन के
धरती से उठ-उठ कर सारे आसमान मे छाये
सब के साथ समान स्नेह से तुमने मुझे पुकारा
प्रिय प्रभात ओ, तुमने मुझे पुकारा

◆

क्या तुम्हे होगा कभी विश्वास

◆

क्या तुम्हे होगा कभी विश्वास,
प्रिय विश्वास!

नयन मे मन मे रमे प्रिय
स्वप्न मे सुन्दर सजे प्रिय
चेतना मे लीन
क्षण क्षण के मनोहर श्वास

बन गया बन्दी तुम्हारा
प्राण जीवन, मान सारा
शेष प्राण-प्रवाह
निर्जन शून्य के आश्वास !

क्षार बन उड़ते क्षणों को
स्वर्ण-जीवन के कणों को
देखता हूँ दूर
मेरा बन गया अभ्यास !

सौप दी ममता हृदय की
प्रिय लहर पाकर समय की
बन गये तुम एक—
तुम मन के मधुर आवास

आ रहे क्षण जा रहे क्षण
अब न उनमें चेतना-कण
मैं तुम्हे देखूँ कि
देखूँ विश्व का मधुमास

◆

सन्ध्या बादलोंवाली यह आयी

◆

सन्ध्या बादलोंवाली यह आयी

डूब गया दिन
दिन का कोलाहल
चित्र वे सजीले
भावमय सम्बल
जिन्हे खोजती
शत-शत नयनो से
यह ससृति
अकुलायी
सन्ध्या बादलोवाली
यह आयी

अलग। हुए जन तन-मन में अपने
दृग मे साकार हुए प्रिय सपने
ज्योति चेतना मे हुई एकाकार
कल्पों की निधि लघु क्षण मे आयी
सन्ध्या बादलोवाली
यह आयी

◆

नीम मे नव फूल आये

◆

(१)

नीम मे नव फूल आये
सुरभिमय वातास !

मधुर मञ्जरियाँ तरङ्गित
कर रही मधु मौन इङ्गित
भर रहा ऋतुराज मे प्रतिश्वास मे विश्वास
सुरभिमय वातास !

(२)

नवल किसलय नवल गति लय
नवल वय का नवल परिचय
हरित - रक्तिम रङ्ग सुन्दर लहर लेता हास
सुरभिमय वातास !

(३)

गन्ध गुञ्जित पवन प्रति पल
लहर चञ्चल हृदय चञ्चल
बस गयी मन मे नयन मे रूप की प्रिय प्यास
सुरभिमय वातास !

◆

मरण-सेज तज कर प्रिय, रण में फिर आया

◆

(१)

जीवन प्रिय से प्रियतर
महामहिम अमृत स्वर
क्षण प्रति क्षण सुन्दरतर
जीवन - आलिङ्गन में बँधकर फिर आया

(२)

गयी दूर निर्बलता
गयी दूर व्याकुलता
अब मैं पथ पर चलता
चलता चलता अविरत पग पग फिर आया

(३)

वे जन जो पास न थे
वे स्वर जो पास न थे
पास पास, पास न थे
उनके मैं पास साँस पाकर फिर आया

(४)

प्रति दिन उल्लास और
प्रति दिन विश्वास और
प्रति दिन सङ्घर्ष और
जीवन की लहरों में प्रिय, मैं फिर आया

◆

बढ़ अकेला

◆

बढ़ अकेला
यदि न कोई सङ्ग तेरे पन्थ-बेला
बढ अकेला

चरण ये तेरे रुके ही यदि रहेगे
देखने वाले तुझे कह क्या कहेगे
हो न कुण्ठित हो न स्तम्भित
यह मधुर अभियान-बेला
बढ़ अकेला

श्वास ये सङ्गी तरङ्गी क्षण प्रतिक्षण
और प्रति पदचिह्न परिचित पन्थ के कण
शून्य का शृङ्गार तू
उपहार तू किस काम मेला
बढ अकेला

विश्व-जीवन मूक दिन का प्राणमय स्वर
सान्द्र पर्वत - शृङ्ग पर अभिराम निर्झर
सफल जीवन जो जगत के
खेल भर उल्लास खेला
बढ़ अकेला

◆

उजले उजले बादल आकाश मे

◆

(१)

उजले उजले बादल आकाश मे
दस बजे दिन के प्रकाश मे

आते हैं, आगे बढ़ जाते हैं
जाते जाते कुछ कह जाते हैं

(२)

हवालात के आगे राह है
लोगो के लक्ष्य का प्रवाह है

लोग व्यस्त आते हैं जाते हैं
चन्द कदम दिखकर छिप जाते हैं

(३)

स्वतन्त्रता का कितना मान है
मुझको अब इसका अनुमान है

सामने, वह, पिंजरे मे तोता है
उसे देख दर्द आज होता है

◆

मुझे तुम्हारी याद आती

◆

(१)

नदी किनारे सन्ध्या बेला
खोया-सा मैं कहीं अकेला
रहता हूँ तब हवा साँझ की
दे दे कुछ अवसाद जाती
मुझे तुम्हारी याद आती

(२)

धीरे धीरे सन्ध्या तारा
आता एकाकी कुछ हारा
मेरे मन में उसकी वह छवि
भर-भर और विषाद जाती
मुझे तुम्हारी याद आती

(३)

बढने लगता और अँधेरा
अन्धकार का पड़ता घेरा
तम की कारा इन नयनों मे
पावस का उन्माद लाती
मुझे तुम्हारी याद आती

◆

युग गये जो बीत

◆

(१)

युग गये जो बीत, उनका मौन प्राणों मे गया भर
वे किसी क्षण के मनोहर चित्र ,सुन्दर भाव, वे स्वर
धूप - छाया मे तरङ्गित बढ रहे थे जो निरन्तर
वे गये आखिर किधर क्या था कही कुछ और सुन्दर

(२)

अब न जीवन - भूमि पर उनका कहीं है चिह्न कोई
अब न साक्षात्कार सम्भव है न उनका चिह्न कोई
उन युगों के सखा - सहचर चल दिये जग में न कोई
जलद - विद्युत् वे तरुण - तरुणी नही हैं आज कोई

(३)

वे पुराने लोग, भू, पर्वत, नगर, वे ग्राम, वे वन
वे समस्याएँ पुरानी और जीवन और वे जन
वे तरङ्गो से मुखर दिन रात जन - पद और कानन
किम्वदन्ती, स्मृति - कथा बन भोगते हैं शेष जीवन

◆

हस के समान दिन उड़कर चला गया
अभी उड़कर चला गया

◆

हस के समान दिन उड़कर चला गया
अभी उड़कर चला गया

पृथ्वी आकाश
डूबे स्वर्ण की तरङ्गों में
गूँजे स्वर
ध्यान हरण मन की उमङ्गो मे
बन्दी कर मन को वह खग चला गया
अभी उडकर चला गया

कोयल सी श्यामा सी
रात निविड मौन पास
आयी जैसे बँधकर
बिखर रहा शिशिर श्वास
प्रिय सङ्गी मन का वह खग चला गया
अभी उड़कर चला गया

◆

दिवस की ज्योति हुई सरसों के फूल सी
सरसों के फूल सी

◆

दिवस की ज्योति हुई सरसों के फूल-सी
सरसों के फूल-सी

लहराया ज्वार में
धरती से आ स मा न
एक रङ्ग
भिन्न रूप
धरती से आसमान
सुन्दरता छायी है सरसों के फूल - सी
सरसों के फूल - सी

सञ्चित आनन्द उड़ा
गीतों के पर खोले
लहरों - सा
खेल रहा
गीतों के पर खोले
यह श्री झर जायेगी सरसों के फूल-सी
सरसों के फूल-सी

◆

कूक रही है कोयल बार-बार

हरी हरी डाल पर
लाल लाल फूलों से
लदी हुई झुकी हुई
पतली सी डाल पर
कूक रही है कोयल
बार बार

एक साल बाद फिर
वसन्त आ रहा है घर
झर रहे पुराने पात
नूतन किस लय आये
भर रही लताएँ फूल
रङ्ग रङ्ग के सुन्दर
नये गीत नये स्वर
जैसे निर्मल निर्झर
कूक रही है कोयल
बार बार

मन का दिन आया है
रङ्ग यह तरङ्ग यह
सजाव यह सिंगार यह
जल, स्थल, आकाश में
समान भाव एक तार
अलङ्कार छाया है
प्राणों का एक स्वर
प्राणों का एक गीत

प्राणों की एक ही पुकार
कूक रही है कोयल
बार बार

◆

भीतर से जितनी साँसें बाहर आती है

◆

भीतर से जितनी साँसे बाहर आती हैं
वे अपने शक्ति-पूर्ण अस्तित्व को ही
उद्घोषित करती हैं

अपनी गति अपना बल चरणों को देती हैं
अपनी बिजली का प्रकाश आँखो को देकर
और लौटकर
इतस्ततः जो बिखरी हुई अदृश्यमान हैं
सञ्जीवनी-शक्ति प्राणो मे भर देती हैं

अतः साँस रहते अपने को या जीवन को
दुर्बल, निर्मल, व्यर्थ समझना कभी किसी क्षण ठीक नही है
किसी प्रकार किसी आशय से
श्वास और निःश्वास देह की
दुर्बलता-निर्बलता हर कर
नयी शक्ति नव बल देते है
स्वतः प्रचुरतर

श्वासो से सम्बन्ध बना है जग से, जीवन से,
समाज से, अखिल विश्व से क्षण प्रतिक्षण मे
उन श्वासों को व्यर्थ समझ कर
अपने को एकाकी रखना
तन तक सीमित रखना मन को

केवल स्व की चिन्ता करना
निश्चय आत्महनन करना है ·

श्वासों से सम्बन्ध विश्व से बना हुआ है
विश्व श्वास के एक एक कम्पन मे होता
सूक्ष्म लहर-सा प्राण-रूप औ' शक्ति-प्रवाही
यह सुदर सम्बन्ध सचेतन संज्ञाकारी
मन पर छा जानेवाला एकान्त अचेतन
औ' अनिष्टकर हर लेता

◆

घर बाहर देश में विदेश में

◆

घर बाहर देश मे विदेश मे
वायु बार बार अङ्ग अङ्ग से
जननी-सी प्यार से दुलार से
स्पर्श किया करती है

कितना ही सङ्ग - साथ छोड कर
मैं एकान्त - सेवन करने चलूॅ
किन्तु वायु जननी-सी स्नेहमयी प्राणमयी
सौ सौ शीतल कोमल लहरों से छू छू कर
कहती-सी है जैसे मौन मधुर
तुम सबसे रूठ, कहो कहॉ चले ?

देखता हूॅ मैं अपलक ऑखों से
वही वायु पेड़ों को, पौधों को,
घासो को, नदियों को, नालों को,
सरोवरों को, उठे पहाड़ों को,
पशुओं को, पक्षियों को, चराचर को,
आसमानवाले उन बादलों को

सर्वदा समान भाव से प्रतिदिन
प्रेमपूर्ण स्पर्श किया करती है
उतना ही प्यार किया करती है
मुझे उत्तरङ्ग जितना करती है
दुनिया की उत्तमता लिये हुए स्नेहमयी
वायु सदा जीवन का, शक्ति का, उमङ्ग का,
लघु-गुरु को, हीन या महान् को
स्नेह से वरदान दिया करती है

जो समानता यह वायु सर्वदा दिखलाती है
जीवन के पावन अधिकारों की सदा सजग
सब के लिए एक दृष्टि से रक्षा करती है
क्या मनुष्य उस समानता को अङ्गीकार कर
पूर्ण चेतन, पूर्ण जीवित, उत्तरदायित्वपूर्ण
कभी हो सकेगा इस विश्व मे समान प्रिय
सभी के लिए नितान्त आवश्यक

◆

उठ किसान ओ

◆

उठ किसान ओ, उठ किसान ओ,
बादल घिर आये हैं
तेरे हरे भरे सावन के
साथी ये आये हैं

आसमान भर गया देख तो
इधर देख तो उधर देख तो
नाच रहे हैं उमॅड़-घुमॅड कर
काले बादल तनिक देख तो
तेरे प्राणों मे भरने को
नये राग लाये हैं

यह सन्देशा लेकर आयी
सरस मधुर शीतल पुरवाई
तेरे लिए, अकेले तेरे
लिए, कहाँ से चल कर आयी

फिर वे परदेसी पाहुन, सुन,
तेरे घर आये है

उड़नेवाले काले जलधर
नाच नाच कर गरज गरज कर
ओढ़ फुहारों की सित चादर
देख उतरते हैं धरती पर

छिपे खेत मे, आँख मिचौनी-
सी करते आये हैं

हरा खेत जब लहरायेगा
हरी पताका फहरायेगा
छिपा हुआ बादल तब उसमे
रूप बदल कर मुसकायेगा

तेरे सपनों के ये मीठे
गीत आज छाये हैं

◆

आज मेरे प्राण का स्वर

◆

आज मेरे प्राण का स्वर
भूमि-अम्बर में गया भर

देखता हूँ अब जिधर
कुछ और सुन्दर
सहज जीवन का सखा
कुछ और श्रीधर

इन क्षणों का राग यह
अनुराग यह कितना मनोहर

आज ममता आप
उमडी आ रही है
आज मन की कोकिला
कुछ गा रही है

आज चुपके से किसीने
क्या हृदय को कुछ दिया कर

ज्योति छायी उमॅड़ जैसे
प्रा ण छा ये
रा त आ यी न हीं
घिर कर प्राण छाये

रहा वसुधा पर बरसता
घिर घुमॅड कर स्नेह-जलधर

◆